Teachingninja.in

Latest Govt Job updates

Private Job updates

Free Mock tests available

Visit - teachingninja.in

HPJS (Mains)

Previous Year Paper (English) Paper-IV 2017

Teachingninja.in

This question paper contains 3 printed pages]

HPJS (Main) Examination—2017

ENGLISH

Paper IV

Time : 3 Hours *Maximum Marks :* 150

1. Write an essay on any *one* of the following topics : 100

   (*a*) If I were the Defence Minister of India.

   (*b*) 'It's the most righteons which of course not the something as most profitable.'

   (*c*) 'You don't have to burn books to destroy a culture. Just get people to stop reading them'.

2. Translate the following into English : 50

वर्तमान समय में राष्ट्रवाद की कोई निश्चित परिभाषा नहीं दी जा सकती है। क्योंकि भिन्न-भिन्न काल-खंडों में इसकी अलग-अलग किस्में रही हैं। राष्ट्रवाद की आधुनिक अवधारणा मुख्य रूप से यूरोपीय देशों में 19वीं और 20वीं शताब्दी में अपने को संगठित करने के प्रयासों में परिलक्षित हुई। जिसमें फ्रांस

P.T.O.

Teachingninja.in

अग्रणी रहा और उसके राष्ट्रवाद में वैचारिक और भौगोलिक तत्वों की प्रधानता स्पष्ट होती है, जिसका अनुसरण बाद के वर्षों में इटली और जर्मनी ने अपने को एक भौगोलिक राष्ट्रीय इकाई में एकीकृत करने के लिये किया। 20वीं शताब्दी में पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के जन्म एवं प्रथम और द्वितीय विश्वयुद्ध के परिणाम स्वरूप एशिया, अफ्रीका के देशों में राष्ट्रवाद का जन्म हुआ। जिसकी उत्पत्ति पश्चिम और पूर्व की संस्कृतियों के मिलने के परिणाम-स्वरूप हुई।

इस प्रकार यह राष्ट्रवाद जिसका जन्म विदेशी शक्तियों की गुलामी से मुक्ति पाने की जद्दोजहद के बीच हुआ, उसने उन गुलाम देशों में अपनी खोई हुई प्राचीन अस्मिता को पुनर्स्थापित करने, स्वयं को जाग्रत करने तथा समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करने का अवसर प्रदान किया। जिसका प्रतिउत्तर भारतीय पुनर्जागरण का सूत्रपात होता था जैसा कि यूरोप में 1453 में हुआ था। अतः 19वीं शताब्दी के मध्य और 20वीं शताब्दी के प्रारम्भिक वर्षों में भारत में एक के बाद एक, समाज सुधार और बौद्धिक आन्दोलनों की शुरूआत हुई, जिसे भारतीय पुनर्जागरण कहा गया। जिसमें धार्मिक कर्मकाण्डों से इतर धार्मिक मूल्यों एवं मानवीय सेवा

Teachingninja.in

भाव और मनुष्यता को महत्ता प्रदान की गई। गरीब एवं दरिद्र व्यक्तियों की सेवा, ऊँच-नीच के ताने-बाने तथा भेद-भाव से मुक्त भारतीय समाज को बनाने का कार्य प्रारम्भ हुआ। यही राष्ट्र की सेवा और राष्ट्रीय देशभक्ति का सच्चा प्रतीक माना गया। इन्हीं विचारों के समर्थक स्वामी विवेकानन्द थे—''मैं उस व्यक्ति को महान मानता हूँ जो निर्धनों के लिये रो देता है, मैं उस प्रत्येक व्यक्ति को देशद्रोही मानता हूँ जिसने विद्या और ज्ञान को जिनके व्यव पर प्राप्त किया और अब उनकी तनिक भी परवाह नहीं करता है।''

Teachingninja.in